दो दुनियाओं का अबूझ संवाद

अमित कोहली



जन्मदिन मनाना शहरी सामाजिक जीवन की एक सामान्य परिघटना है। आस-पड़ोस, गली-मुहल्ले, स्कूल-कॉलेज में हर एक-दो महीने में हमारे किसी क़रीबी का जन्मदिन होता है। उसे हम अपने-अपने तरीक़े से ख़ास बनाने की कोशिश करते हुए कोई आयोजन करते हैं। कुछ लोग घर पर अपने परिवार और नज़दीकी दोस्तों के साथ, तो कुछ किसी रेस्तराँ-होटल में जाकर ख़ुशी का यह दिन मनाते हैं। कोई घर के बने पकवान और मिठाइयाँ पसन्द करता है, तो कोई बाहर से खाना मँगवाकर दावत देता है।

समाज के प्रति सरोकार रखने वाले कुछ व्यक्ति इस दिन अनाथालय, वृद्धाश्रम या किसी ग़रीब बस्ती में जाकर फल, मिठाई, खाना, आदि बाँटकर ख़ुश होते हैं। कुछ लोग धर्मस्थलों या अस्पतालों को दान देने के लिए जन्मदिन का मौक़ा चुनते हैं। पर्यावरण संरक्षण की मुहिम का नतीजा है कि जन्मदिन पर पौधारोपण करने का चलन बढ़ रहा है। इसका प्रचार सरकार और ग़ैर-सरकारी संगठन कर रहे हैं, साथ ही कुछ स्कूलों में भी विद्यार्थियों के जन्मदिन पर पौधा लगाने का काम किया जाने लगा है।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधक मण्डल द्वारा विकसित और प्रकाशित भाषा की *पाठ्यपुस्तक बालभारती* (अँग्रेज़ी माध्यम), कक्षा 2 में एक गतिविधि (1.5 लैंग्वेज स्टडी; पृष्ठ 11) है। संज्ञा पहचानने की इस गतिविधि में कुछ इस तरह का पैराग्राफ़ दिया गया है– "राजू नाम के विद्यार्थी का जन्मदिन है। स्कूल ले जाने के लिए उसकी माँ उसे आम का एक पौधा देती है। 'हैप्पी बर्थडे' कहकर सारे दोस्त उसे बधाई देते हैं। शिक्षिका के साथ जाकर वह स्कूल के पीछे पौधारोपण करता है। सारे बच्चे तालियाँ बजाते हैं।"

गतिविधि संज्ञा पहचानने की है। साथ में पौधा लगाने का प्रचार है और पर्यावरण संरक्षण भी सिखाया जा रहा है, जो अच्छी बात है। लेकिन इस गतिविधि में एक चीज़ और सिखाई जा रही है, वह है जन्मदिन की अवधारणा! इसपर पुनर्विचार की ज़रूरत है।

लोक बिरादरी प्रकल्प, हेमलकसा द्वारा संचालित साधना विद्यालय में जब पाठ्यपुस्तक


चित्र 1

बच्चों को ही जन्मदिन मनाने के बारे में पता था। टेलीविज़न के ज़रिए यह जानकारी उन तक पहुँची थी। शेष बच्चों से जब वर्ग शिक्षक ने बात की तो विद्यार्थी उनसे सहमत नहीं हो पा रहे थे। विद्यार्थियों का तर्क था कि 'जन्मदिन' तो वही होगा जिस दिन हम पैदा हुए थे। उसके बाद सारे दिन एक जैसे हैं। हम तो एक ही बार पैदा हुए हैं, फिर हर साल जन्मदिन कैसे?

का यह हिस्सा पढ़ाया जा रहा था तो कक्षा में रोचक बातचीत हुई और कुछ अनुत्तरित सवाल भी उठे। शिक्षक ने अपने तरीक़े से नवाचार करते हुए गतिविधि के मक़सद को विस्तार दिया।

विद्यालय की इस कक्षा-2 में कुल 20 विद्यार्थी हैं। यह कक्षा महुए के एक विशाल पेड़ की ठण्डी छाँव में लगती है। गोण्डी, तेलुगु और महारी, विद्यार्थियों की मातृभाषाएँ हैं। शिक्षण की माध्यम भाषा अँग्रेज़ी है। इसलिए कक्षा में इन सभी भाषाओं की मिली-जुली ध्वनियाँ गूँजती रहती हैं।

चर्चा में पहला मसला जन्मदिन की अवधारणा था। यह स्कूल पूर्वी महाराष्ट्र के आदिवासी बहुल अंचल में स्थित है। यहाँ गाँवों के कुछ ही घरों में टेलीविज़न है। बिजली कभी-कभी आती है। कई गाँवों तक बिजली पहुँची ही नहीं है। तालुका मुख्यालय के आसपास ही मोबाइल नेटवर्क रहता है।

हर साल जन्मदिन मनाना एक आधुनिक पर्व है। इस क्षेत्र में बहुतायत से बसने वाली माडिया और गोण्ड जनजाति के रीति-रिवाज़ों में ऐसा कभी हुआ नहीं है। इसलिए जब शिक्षक ने दूसरी कक्षा के बच्चों को वह पैराग्राफ़ पढ़कर सुनाया तो चर्चा की शुरुआत में अधिकांश विद्यार्थियों को यह समझ नहीं आ रहा था कि 'जन्मदिन' क्या होता है। कक्षा में दो-तीन

लेकिन चूँकि पाठ में 'जन्मदिन मनाने' का स्पष्ट उल्लेख था, शिक्षक ने कई सारे उदाहरण देकर और चित्र जुटाकर बच्चों को दिखाए। इस तरह विद्यार्थियों को समझाने का प्रयास किया कि जन्मदिन क्या होता है। इस क्रम में जन्मदिन के तमाम प्रतीक बाज़ारवाद की ओर इशारा कर रहे थे, मसलन, केक, मोमबत्तियाँ, गुब्बारे, रंगीन टोपियाँ, टॉफ़ियाँ, चमचमाते रंगीन काग़ज़ों में लपेटकर उपहार देना और लेना वग़ैरह। शहरी मध्यम वर्ग की जीवनशैली में रचे-बसे लोगों के लिए यह इतनी सामान्य बात है कि वे इस बारे में ठहरकर सोचना भी ज़रूरी नहीं समझते। जिन बच्चों के पास चप्पल और कपड़े तक नहीं होते, जिनके लिए जलेबी एक महँगी और ख़ास मिठाई है, उनके सामने केक और रंगीन टोपियों जैसी दुर्लभ वस्तुओं की उपयोगिता पर कक्षा में बातचीत करना कठिन था।

ख़ैर, शिक्षक ने जन्मदिन की अवधारणा बच्चों को जैसे-तैसे समझा दी। लेकिन जब पौधारोपण का ज़िक्र आया तो फिर कई प्रश्न उठ खड़े हुए। अगर किसी बच्चे का जन्मदिन छुट्टी के दिन आए तो? अगर उस दिन बहुत तेज़ बारिश हो रही हो तो? गर्मियों के मौसम में किसी का जन्मदिन आए तो नए लगाए पौधे को ज़िन्दा रखने के लिए पानी कहाँ से लाएँगे? चलते-चलते बात यहाँ तक पहुँची कि अगर पौधारोपण ही करना है, तो हम जन्मदिन

का इन्तज़ार क्यों करें? दूसरी कक्षा के उन विद्यार्थियों ने मिलकर तय किया कि कल ही हम अपने घरों से पौधे लाकर स्कूल के आसपास लगाएँगे।

अगली सुबह कई नन्हे हाथों में पौधे थे। रोशन और वैशाली गुलाब का एक-एक पौधा लाए। मानव और आरुष अमरूद के पौधे लेकर आए। हंशिका सूरजमुखी का पौधा लाई थी। सबने मिलकर गड्ढे खोदे, पौधे लगाए और बाल्टियों से ढोकर पानी दिया। हालाँकि, पानी की कमी और देखभाल के अभाव में वे पौधे कुछ हफ़्तों में मर गए।

पाठ्यपुस्तकों के पाठ लिखने वाले विद्वान अकसर शहरी मध्यम वर्ग से आते हैं। अगर वे उस पृष्ठभूमि के न भी हों, तो स्कूली प्रक्रियाएँ उन्हें आधुनिकता के रंग में रंग देती हैं। यही वजह है कि पाठ्यपुस्तकों में स्थानीय विविधताओं को नकारकर सर्वत्र एकरूपता देखने-दिखाने की कोशिश नज़र आती है। पूरे प्रदेश में पहुँचने वाली इस पाठ्यपुस्तक में इस तरह की गतिविधि शामिल हो जाने से पाठ लिखने वाले विद्वानों की संवेदनशीलता और प्रदेश के बच्चों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बारे में उनकी जानकारी पर गहरे सवाल उठते हैं।

वर्ष 2011 की जनगणना के मुताबिक़, महाराष्ट्र में अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या तक़रीबन 1 करोड़ पाँच लाख थी, जो प्रदेश की कुल आबादी का साढ़े नौ फ़ीसदी थी। ठाणे, पालघर, नाशिक, धुळे, नन्दूरबार, पुणे, नागपुर, अमरावती, यवतमाळ, गोन्दिया, चन्द्रपुर और गढ़चिरौली जैसे ज़िलों में अनुसूचित जनजातियों की घनी बसाहटें हैं। अधिकांश जनजातीय समुदाय आधुनिकता, शहरी जीवन और बाज़ारवाद से दूर हैं। विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाना ही अगर इस गतिविधि का उद्देश्य है तो फिर जन्मदिन जैसा कृत्रिम अवसर चुनने की ज़रूरत ही नहीं थी। प्रदेश में कई इलाक़ों में पानी की उपलब्धता कम है। गर्मियों के मौसम में मराठवाड़ा, खानदेश और विदर्भ में पानी की क़िल्लत होती है। लगाए गए पौधों को गर्मियों में ज़िन्दा रखने का इन्तज़ाम प्रदेश के सैकड़ों गाँवों में नहीं है। पर्यावरण संरक्षण एवं पौधारोपण पर किसी और तरह से भी तो बात हो सकती थी, जो प्रदेश के सभी अंचलों और समुदायों के बच्चों के लिए सहज और स्वीकार्य हो।

Naming words

1.5 Language Study

a. Listen carefully and answer the following questions.

What is your name ?

Are you a boy or a girl ?

Who all are there in your family ?

Which places do you like to visit ?

Which is your favourite animal ?

What do you like to eat ?

What is your favourite toy ?

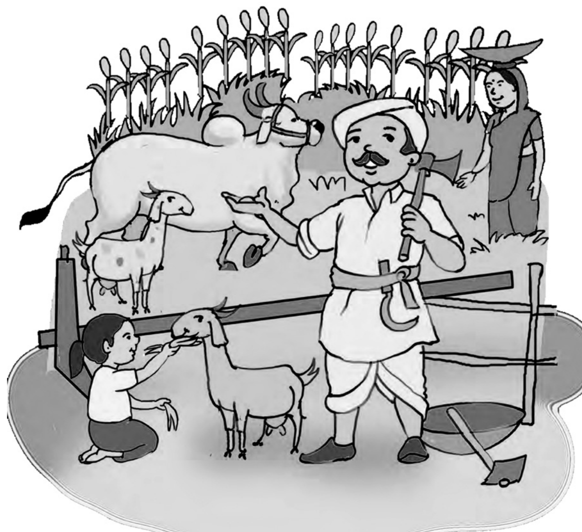
Do you write with a pen or a pencil ?

All the answers are naming words. **Naming words** are simply names of anything.

चित्र 2

इसी पाठ्यपुस्तक में जो अधिकांश चित्र हैं, वे लिबास, केशसज्जा, जूतों आदि से शहरी और मध्यमवर्गीय बच्चों के नज़र आते हैं। उदाहरणार्थ, पृष्ठ 3, 5, 6, 28, 50, 62 के चित्रों से ग्रामीण और शहरी ग़रीब बच्चे नदारद हैं। पृष्ठ 7 पर यश और उसके पालतू कुत्ते मोती की कहानी है, जिसमें यश का एक जूता खो जाता है। मोती, यश को उस जूते तक लेकर जाता है। इसी तरह पृष्ठ 13 पर अँग्रेज़ी भाषा में वार्तालाप सिखाने वाला एक अभ्यास है, जिसमें एक पिता और बेटी की संक्षिप्त बातचीत है। चित्र में मेज़पोश से सजी मेज़ पर एक केक रखा है और बोन चाइना की तश्तरियाँ। पाठ में बेटी अश्विनी अपने पिता से केक खाने की फ़रमाइश करती

है। हिदायत देते हुए पिता कहते हैं कि डिनर के बाद केक खाना और उसके बाद टूथब्रश से दाँत माँजना। जिस प्रदेश की तक़रीबन 55 फ़ीसदी आबादी गाँवों में गुज़र-बसर करती है, वहाँ पाठ्यपुस्तकों में बच्चों से केक खाने और टूथब्रश से दाँत माँजने को कहा जा रहा है। यह साफ़तौर पर शहरी मध्यम वर्ग के घर का



चित्र 3

चित्रण है जो इस पाठ्यपुस्तक को पढ़ने वाले प्रदेश के अधिकांश बच्चों को मयस्सर नहीं है।

ग्रामीण जीवन का जो चित्रण और वर्णन पाठ्यपुस्तकों में होता है, वह नितान्त काल्पनिक और एकरूपता लिए होता है। बानगी देखिए कि पृष्ठ 14 पर विद्यार्थियों से एक तस्वीर का वर्णन करने को कहा जा रहा है। तस्वीर में एक किसान अपने तमाम औज़ारों, हँसिया, फावड़ा, कुल्हाड़ी, हल और डलिया के साथ धोती, साफ़ा और कमर पर गमझा बाँधे मुस्तैद नज़र आ रहा है। पीछे घास का मैदान-सा है जिसमें शहरी ढब की लाल-हरी साड़ी लपेटे एक महिला है। आसपास मवेशियों का जमावड़ा भी है। यह किसान की स्टीरियोटाइप्ड परिकल्पना का सटीक चित्रांकन है। क्या कोई किसान इतने सारे औज़ारों को एक साथ लेकर खेत जाता है? बिरला ही कोई किसान होगा जो लम्बी धोती और पूरी बाँह वाली कमीज़ पहनकर फावड़ा, कुल्हाड़ी या हँसिए से काम करने के लिए खेत जाता हो।

भाषा की इस किताब में कई चीज़ों को समाहित करने की सुविचारित कोशिश नज़र आती है। आप इस सूची को देख सकते हैं :

वाद्य यंत्रों की जानकारी (पृष्ठ 29), फ़न्तासी और परिकथा (पृष्ठ 35-40), उपदेशपरक कथाएँ (पृष्ठ 13, 21-23, 44-46), कच्चे आम का पना बनाने की गतिविधि (पृष्ठ 50-51), पौराणिक कथा (*महाभारत* से, पृष्ठ 53-55), क्रिकेट, तीरन्दाज़ी, फ़ुटबाल, शतरंज जैसे खेलों का उल्लेख (पृष्ठ 55) हो या पौधे के अंग (पृष्ठ 43), टेलीस्कोप (पृष्ठ 60) जैसे विज्ञान से जुड़े पाठ, इन सबमें अनुसूचित जनजातियों की न तो छवि नज़र आती है, न ही उनका कोई ज़िक्र है जबकि प्रदेश की आबादी में इनका तक़रीबन दस फ़ीसदी हिस्सा है। पाठ्यपुस्तक निर्माण की प्रक्रिया में हालाँकि विषय विशेषज्ञों के साथ-साथ चन्द शिक्षक और ग़ैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि भी शामिल होते हैं, लेकिन उन्हें लेखन समिति में शामिल करना, पाठ्यपुस्तक के स्वरूप, विस्तार और हदों का फ़ैसला करना, पाठों का चयन या सम्पादन करना, चित्रों और भाषा की शैली आदि तय करना, यह सब प्रशासनिक प्रक्रिया है। पाठ्यपुस्तक निर्माण प्रक्रिया का लोकतांत्रिकरण नहीं हुआ है। लिहाज़ा बच्चों की बात पाठ्यपुस्तक तक पहुँचाना और उसमें शामिल करवाना एक लम्बी एवं दुरूह प्रक्रिया है।

किसी जनजातीय अंचल की बात किसी पाठ में शामिल हो भी जाए, तो वह अजीब, अवास्तविक और अतार्किक रूप में भी शामिल हो सकता है। उदाहरणार्थ, दूसरी कक्षा की ही मराठी माध्यम *बालभारती* में एक पाठ है 'झरीपाडा' (पृष्ठ 35-36)। पाठ में दिए विवरण में कहीं भी वारली समुदाय का नाम नहीं लिया गया है, जबकि वह उनके रहन-सहन के बारे में

है। उस पाठ में वारली चित्रकला का ज़िक्र भी है चित्र भी, लेकिन ये चित्र परम्परागत रूप से एक जनजाति बनाती है, इसका उल्लेख सोच-समझकर या शायद भूलवश टाल दिया गया है। पाठ्यपुस्तक निर्माता विद्वानों ने ऐसा क्यों किया होगा? वारली जनजाति की कोई बच्ची, जो जानती है कि मेरे घर-परिवार में परम्परागत रूप से इस तरह की चित्रकारी की जाती है, यह पाठ पढ़कर क्या महसूस करती होगी?


चित्र 4

हालाँकि, दूसरी कक्षा की मराठी माध्यम *बालभारती* में उसी कक्षा की अँग्रेज़ी माध्यम *बालभारती* के बरअक्स ग्रामीण परिवेश से जुड़े पाठ और चित्र तुलनात्मक रूप से ज़्यादा हैं। शहरी मध्यमवर्गीय परिवेश, परिवार और बच्चों का चित्रण तो है, पर साथ ही ग्रामीण परिवेश को भी पाठ्यपुस्तक में जगह मिली है।

चौथी कक्षा की अँग्रेज़ी माध्यम *बालभारती* में ईसप और जातक कथा है। इसमें चीन और रूस की एक-एक कहानी, जॉन रस्किन की बोधकथा और यहाँ तक कि सचिन तेन्दुलकर पर भी एक पाठ है, लेकिन भाषा की इस पाठ्यपुस्तक में महाराष्ट्र या भारत के किसी भी जनजातीय अंचल की लोककथा या लोकगीत नहीं है।

इस हाशियाकरण से एक तो यह सन्देश जाता है कि जनजातीय समुदायों द्वारा उम्दा साहित्य नहीं रचा गया है। दूसरा यह कि पाठ्यपुस्तक जिस भाषा-वर्ग के साहित्य को विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत कर रही है, वह अंगीकार करने योग्य है। साहित्य संस्कृति का वाहक होता है, अतीत और भविष्य की दोनों ही दिशाओं में। पाठ्यपुस्तकें अगर जनजातीय समुदाय और उनमें रचे गए साहित्य की अवहेलना करना जारी रखेंगी तो स्वाभाविक ही विद्यार्थियों के मन में जनजातीय संस्कृति के प्रति असम्मान का भाव क्रमशः दृढ़ होता जाएगा। अन्य समुदायों से आने वाले विद्यार्थियों के साथ-साथ जनजातीय समुदायों से आने वाले विद्यार्थी भी यह मानने लग सकते हैं कि अतीत में हमारे पुरखों ने गुणवत्तापूर्ण साहित्य की रचना नहीं की है, और इसलिए बेहतर साहित्य वही हो सकता है जो ग़ैर-जनजातीय संस्कृति में उपजा हो।

पाठ्यपुस्तकें हों या कक्षा में होने वाला ग़ैर-शैक्षणिक वार्तालाप, उसमें हम किस तरह के मूल्यों और धारणाओं को पोषित कर रहे हैं? ऊपर हमने देखा कि जिस परिवेश से कक्षा में बच्ची पहुँचती है, उसके प्रति पाठ्यपुस्तक में समझ का नितान्त अभाव है। जब समझ ही नहीं होगी तो संवेदनशीलता और समावेशीकरण कैसे होगा?

सभी को आधुनिकता के एकरूप साँचे में ढाल देना तो शिक्षा का लक्ष्य नहीं होना चाहिए न! हम अपने राष्ट्र की सांस्कृतिक विविधता पर नाज़ करते हैं, विशिष्ट मौक़ों पर विविधता में एकता का सगर्व उल्लेख भी करते हैं, लेकिन एकता के नाम पर एकरूपता थोपना क्या शिक्षा का उद्देश्य हो सकता है?

अमित कोहली घुमक्कड़ी करने और पढ़ने के शौक़ीन हैं। तक़रीबन 15 साल एकलव्य फ़ाउण्डेशन के साथ विविध स्तरों पर काम किया है। शिक्षा के इतिहास, डिस्कूलिंग एवं वैकल्पिक शिक्षा में विशेष रुचि है। अमित स्वयं को वैचारिक रूप से गाँधीजी के क़रीब पाते हैं।
सम्पर्क : amt1205@gmail.com